एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

लीची के प्रमुख कीट एवं एकीकृत कीट प्रबंधन

*डॉ. विवेक कुमार विश्वकर्मा[1], मनीष कुमार गुप्ता[2] एवं पुनीत शर्मा[3]

[1]असि. प्रोफेसर, पादप रोग विभाग, एलएम कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड रिसर्च स्टेशन, नरायनपुर (आईजीकेवी), छत्तीसगढ़, भारत

[2]असि. प्रोफेसर, कृषि विज्ञान विभाग, स्टॉरेक्स विश्वविद्यालय, गुरूग्राम, हरियाणा, भारत

[3]शोध छात्र, पादप प्रजनन विभाग, टीडी पीजी कालेज, जौनपुर उ.प्र., भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: puneetsharma0038@gmail.com

लीची एक बहुत ही लोकप्रिय रसीला और स्वादिष्ट उपउष्णकटिबंधीय फल है, यह अपने अनोखे स्वाद, अद्भुत सुगंध और आकर्षक रंग के लिए दुनियां भर में प्रसिद्ध है। लीची में विभिन्न प्रकार के कीटों का प्रकोप होता है, जिससे लीची की गुणवत्ता एंव उत्पादन प्रभावित होता है। लीची की अच्छी गुणवत्ता और अधिक उपज प्राप्त करने के लिए कीट प्रबंध का विशेष महत्व है। भारतवर्ष के मुख्य लीची उत्पादक क्षेत्रों में लीची के प्रमुख कीट (फल एंव बीज भेदक, छालभच्छी कीट, पत्ती खाने वाली सूड़ी, पत्ती लपेटक, मकड़ी बग, दहिया कीट, लाल सूड़ी) इनके द्वारा प्रतिवर्ष लीची वृक्षों एंव फलों को सर्वाधिक नुकसान पहुंचाया जाता है। वर्ष दर वर्ष अधिकाधिक रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से खाद्य पदार्थो में फूडचयन के माध्यम से इन रासायनों की मात्रा हमारे शरीर में पहुंचती है अधिक समय तक रासायनो के प्रयोग से कीटों में रसायनों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता का विकास हो जाता है और ये कीट एक समय भीषण रूप धारण कर लेते है। रासायनों के अन्धाधुनध प्रयोग को कम करने से हम वातावरण और खाद्य पदार्थ को सुरक्षित कर सकते है और इसके दुष्परिणाम से बच सकते है। इस लिये कृषि विशेषज्ञ कीटों के नियंत्रण के लिए एकीकृत कीट प्रबंध पर जोर दे रहे है।

बीज एंव फल बेधक (*कोनोपोमोरफा क्रैमेरेला और एक्रोसरकोप्स*)

यह लीची की फसल को नुकसान पहुँचाने वाला सबसे हानिकारक और बहुभक्षी कीट है। इस कीट की एक साल में कई पीढ़ियां पायी जाती हैं, लेकिन लीची के फलन (फल लगने) के समय की दो पीढ़ियां फसल को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाती हैं।

चित्र-१. प्रारम्भिक अवस्था में फल बेधक से ग्रसित लीची के फल।

पहली पीढ़ी

इस पीढ़ी का प्रकोप अप्रैल के पहला सप्ताह में जब लीची के फल लौंग के दाने के आकार के होते हैं तब अधिक दिखाई देता है। इस कीट की मादा पुष्पवृंत (फल के डंठल) पर अंडे देती है, २-३ दिन में अंडों से सूंडियां (इल्ली/लार्वा) निकलकर बढ़ते हुए फलों के अंदर प्रवेश कर जाती है और बीज को खाना प्रारम्भ का देती है। बीज खाए जाने के कारण प्रभावित फल गिर जाते हैं। ऐसे फलों को ध्यान से देखने पर उन पर बारीक छिद्र दिखाई देते हैं।

दूसरी पीढ़ी

इस पीढ़ी का प्रकोप मई के पहले सप्ताह में फल पकने से लगभग १५-२० दिन पहले दिखाई देता है, सूंडी डंठल के पास से फल के भीतर प्रवेश करती है और बीज तथा छिलके को खाकर नुकसान पहुँचाती है। प्रभावित फल खाने योग्य नही रहते तथा गुणवत्ता ख्राब होने के कारण फलो की बातार कीमत भी घट जाती है जिससे कृषक को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है। इस कीट की सूंडी का रंग लीची के गूदे जैसा ही होता है। यह फल के अंदर ही मल (विष्ठा) एकत्र करती है, जो प्रभावित फल का छिलका डंठल के पास से हटाने पर साफ दिखाई देता है। लीची के फल पकने से ठीक पहले यदि वातावरण में नमी या आर्द्रता बढ़ जाती है तो इस कीट के प्रकोप की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है।

चित्र-२. परिपक्वता के समय फल बेधक से ग्रसित लीची के फल।

प्रबंधन

जैविक नियंत्रण हेतु- ट्राइकोग्रामा चिलोनिस परभक्षी / ५०,००० अंडे प्रति हे. (फूल निकलने के बाद, मार्च प्रथम सप्ताह में) एवं फेरोमोनट्रैप १५ प्रति हे. वृक्ष की मध्य ऊँचाई पर प्रयोग करें। मंजर निकलने एवं फूल खिलने से पहले रासायनिक छिड़काव से कीटों की रोकथाम अवश्य करें। पहला कीटनाशी छिड़काव- थायमेथोक्साम ८० प्रतिशत डब्ल्यू.जी. १.२५ ग्राम/ली. (०.१ प्रतिशत पानी के घोल) का

प्रयोग लीची फल जब मटर के दाने के आकार के हो जायें तब करें। जमीन पर गिरे सभी फलों को इकट्ठा कर जहाँ तक संभव हो नष्ट करें या गहरे गड्ढे में दबा दें। दूसरा कीटनाशी छिड़काव फल पकने के १५-२० दिन पहले- साइपरमेथ्रिन १० इ.सी. २ मि.ली//ली. या साइपरमेथ्रिन २५ इ.सी. ३ मि.ली.-/१० ली. या डेल्टामेथ्रिन २.५ इ.सी. १ मि.ली.-/ली. या इमिडाक्लोप्रिड १७.८ एस.एल. ०.५ मि.ली. -/ली. या क्लोरपायरीफह्क्स २० इ.सी. १.५-२.० मि.ली.-/ली पानी के घोल का प्रयोग करें।

पेड़ो की छाल खाने वाली सूड़ी (*इन्डरबेला ट्रेट्राओनीस या क्वाड्रीनोटाटा*)

इस कीट की सूड़ी बड़े आकार की हो ते हैं जो वक्षों के छाल खाकर जीवन निर्वाह करते हैं। यह वक्ष के मोटे धड़ों एवं शाखाओं में छेदकर दिन में छिपे रहते हैं और रात्री में बाहर निकलते हैं। ये अपने बचाव के लिए टहनियों के ऊपर विष्ठा एवं छाल के बुरादे की सहायता से जाला बनाते हैं। इनके प्रकोप से टहनियाँ कमजोर हो जाती हैं और कभी भी टूटकर गिर सकती हैं। इसके प्रकोप से पोषक तत्त्वों की आवाजाही बाधित हो जाती है। एक वर्ष में इस कीट की एक ही पीढ़ी होती हैं।

प्रबंधन

१. पौधों के तनो व टहनियों पर लगे जाले को नारियल झाडू से खरोचकर साफ से कीट की सूड़ी मर जाती है।
२. पौधों के तनों में चूने का लेप लगाना चाहिये।
३. रासायनिक नियंत्रण में कीटों की सूड़ी को मारने के लिये नुवाक्रोन ५.० मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर कटी हुई छाल वाले हिस्से में किसी कपड़े या सूई की सहायता से डालना चाहिये।
४. बगीचे की नियमित देखभाल करनी चाहिये साथ ही साफ-सफाई का विशेष ध्यान रना चाहिये।

लीची का शूट बोरर (कोनोपोमोर्फा साइनेंसिस)

लीची की फसल को भारी नचसान पहुचां ने वाला एक मुख्य कीट है। इसका वैज्ञानिक नाम कोनोपोमोर्फा साइनेंसिस है। इस कीट का वयस्क छोटे आकार का भूरे या स्लेटी रंग का पतंगा होता है। इसकी एंटनी शरीर से काफी लंबी होती हैं। इस कीट का लारवा सर्वाधिक नुकसान पहुचाता है। लारवा हलके पीले या गुलाबी रंग का होता है सिर गहरे भूरे रंग का होता है। मादा कीट नयीं कोमल पत्तियों, फलो के छिलको पर अंडे देती है। लारवा पत्तियों के डण्ठल और नयी शाखाओं के अंदर छेंदकर प्रवेश करता है। आंतरिक ऊतको को खाने से पौधों के शीर्ष भाग की नवीन शाखायें सूखने लगतीं है, पौधों में डेड हर्ट हो जाता है। फलन के समय इस कीट के लारवा डंठल और बीज में घुसकर नुकसान पहुंचाते है जिससे फल अपरिपक्व अवस्था में ही अंदर से सडकर गिरने लगते है।

प्रबंधन

१. प्रभावित सूखी टहनियों को काट कर जला देना चाहिये।
२. पेंड़ के नीचे गिरे संक्रमित फलो और पत्तियों को नियमित रूप से हटाकर नष्ट करना चाहिये।
३. वयस्क कीटों को नियंत्रित करने के लिये फेरोमोन ट्रेप का उपयोग करना चाहिये।
४. रासायनिक नियंत्रण हेतु लेम्बडासाइहलोथ्रीन ५ प्रतिशत ईसी १ मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
५. फलो की तुड़ाई के १५-२० पूर्व से रासायनों के छिड़काव को पूर्णतः बंद कर देना चाहिये।

दहिया कीट (मिलीबग) ड्रोसीचा मैंगीफेरा

यह कीट आम के वृक्षों पर आक्रमण करता है पर लीची के बाग आस-पास होने के कारण कभी-कभी इस कीट का प्रकोप लीची पर भी देखा गया है। इसका प्रकोप दिसंबर से मई माह तक पाया जाता है। ये कीट उजले कलदंउपब रंग के होते है तथा मधुस्राव भी करते है जिस पर चीटी और काली फफूंद गलाने गाते है। वयस्क होते कीट अपनी ऊपरी सतह को उजले पाउडर जैसे आवरण से गाह्म लेते है। इसके वयस्क बड़े आकार ०.८ से १.५ सेमी के होते है और नवजात के साथ पत्तियों व कोमल टहनियों से लगातार रस चूसकर हानि पहुंचाते है। यहाँ तक की ये धीरे-धीरे चलकर नवजात फलो से भी चिपककर रस चूसते है। रस चूसने के कारण पेंड पीलापन लिए हुए और अस्वस्थ प्रतीत होते है तथा अपरिपक्व अवस्था में पत्तियां व फल गिरने लगते है।

लीची में दहिया कीट का प्रबन्धन

भौतिक एवं यांत्रिाक रोकथाम :

1. पेड़ के मुख्य तने पर जमीन से १ण्५ से २ फीट की ऊंचाई पर ग्रीस ;ळतमेंमद्ध या ग्रीस लगी प्लास्टिक पटटी लपेटे।
2. पेड़ के चारों ओर निराई-गुड़ाई करें जिससे मिटटी में छिपे अंडे नष्ट हो जाएं।

रासायनिक प्रबन्धन :

3. इमिडाकालोप्रिड १७.८ एसएल १ मिली. प्रति ३ लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें।
4. थियामेथौक्सम २५ एससी १ ग्राम प्रति ३ लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें।

नोट : छिड़काव करते समय घोल में थोड़ा चिपकने वाला पदार्थ या डिटर्जेन्ट पाउडर भरपूर मिलाएं।

लीची माइट

लीची के बगीचे को नुकसान पहुचाने वाला एक अत्यंत गम्भीर कीट है। यह कीट लीची की पत्तियों के निचले हिस्से का रस चूसता है। जिससे पत्तियों पर लाल भूरे रंग या चाकलेटी रग के मखमली धब्बे बन जाते है। कीट के अत्यधिक प्रकोप होने पर पत्तियां नाव के आकार में मुड़ जाती है, और में सूखकर गिर जाती है। जिसके कारण फूल और छोटे फल बनने की प्रक्रिया रूक जाती है। फूल प्रभावित होने पर फलों का निमार्ण नही हो पाता जिससे उपज पर भारी प्रभाव पड़ता है।

प्रबन्धन

१. फल तुड़ाई के बाद प्रभावित शाखाओं की छटाई करके जला दें।
२. नीम तेल ५ मिली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें।
३. वेटेबल सलफर ३ ग्राम प्रति लीटर पानी या प्रोपार्तगाइटि ५७ प्रतिशत ईसी २ मिली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

नोट : फूल खिलने के समय छिड़काव न करें।